

ओउम्

ज्ञान प्रकाश

भूमिका

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज की शुचि परागाशिरलाय ।
करत पारसी ग्रन्थ की बज भाषा सुखदाय ॥ १ ॥

जे पण्डित ज्ञानी गुनी जे आरिफ बुधिमान ।

ते शर्मैं या ग्रन्थ की बात महा सुखदान ॥ २ ॥

जिन नहिं जान्यो आतमा मानुष को तनु पाय ।

मायत रसा समान ते ग्रहद्वार मन लाय ॥ ३ ॥

गाम अलाउद्दीन ते बड़े ओलिया जान ।

भियां निजामुद्दीन के गुरु ज्ञान प्रद मान ॥ ४ ॥

तिन कीन्यो या ग्रन्थ कों इक इस गजलबखान ।

दू सै दस बैठें कहीं एक एक सुखदान ॥ ५ ॥

जिन पै श्री हरि गुरु कृपा कीनी अधिक बनाय ।

तिन लख पायो आतमा मौन भये सुख पाय ॥ ६ ॥

मूड़ मुड़ावैं बहुत नर दूँदत फिरत अनेक धरैं ॥ ७ ॥

तीरथ बत बहुतक करें बिल्ली देखे एक

जो देखै नित एक कों सब में सदा समान ॥
 सो पूरौ साधू सुधी सो साहब विज्ञान ॥ १०॥
 बन्दौ कवि जन सरलचित परहित श्रीति सुखदाय ॥
 भूल भूक जो होय कहु लीजौ समुक्ति बसाय ॥ ११॥
 द्विज माथुर बलदेव कवि शाहाबाद सुधाय ॥
 ब्रज भाषा दीवान कहि ज्ञान प्रकाश सुभाय ॥ १२॥
 सम्बत एक हजार पुनि नौसे उनइस जानि ॥
 कैतिक मास सु पक्षसित तेरस मङ्गल खानि ॥ १३॥

॥ छप्पे ॥

कोई कोट बनाय जीति जग भौह चढ़ावै ॥
 कोई ताल बनाय पुराय मारग दरसावै ॥
 कोई श्री गोपाल देव मन्दिर बनवावत ॥
 कोई बाग लगाय मिष्ट फल रसत खवावत ॥
 बलदेव सुकवि श्री हरि कृपा जीव बिबिध विधि जस लहै ॥
 त्यों गुनी जनन के मोद हित कवि नवीन ग्रंथ न कहै ॥ १४॥

अन्यच्च

कहाँ सु वेद व्यास महाभारत जिन गायो ॥
 युधिष्ठिर भूप सुजस जिन को जग दायो ॥

कहाँ सु बिक्रम भोज सूर केशव गुरुवारी ॥
 कहाँ सु तुलसीदास कथा हरि बिशद उचारी ॥
 बलदेव सु कवि जग स्वप्न सम नित्य सुजस जो पाइये ॥
 यों समभि यथा मति गुनिन हित प्रेम कथा कहूँ गाइये ॥ २॥

अन्यच्च

जगत कह जी घने जीव नित सुनै सुनावै ॥
 ये विरले वे पुरुष चित आत्म सों लावै ॥
 जग निन्दा को छोड़ि संग संतनु को कीजै ॥
 श्री हरि गुरु की भक्ति माँझ निश्चै मन दीजै ॥
 जब है प्रसन्न जगदीश हरि परम कृपा जा पर करें ॥
 तब लहै शुद्ध आत्म अखिल जगत एक हरि चित धरै ॥ ३॥

अन्यच्च

धन्य धन्य गुरु देव भक्ति मार्ग दरसायो ।
 श्री गीता को अर्थ कृपा कर आपु पढ़ायो ॥
 धन्य धन्य सत संग ब्रह्म जानिन को भाई ॥
 जिन की सकै बात सकल भ्रम भीर नशाई ॥
 बलदेव सु कवि धनि ते पुरुष जे अपनों मन बस धरै ॥
 पुनि जगत जान भूठौ सकल एक आत्मा चित धरै ॥ ४

अन्यच्च

जिन पर श्री हरि कृपा सदा सत भासा धावै ॥
 जिन पर श्री हरि कृपा संग संतन को पावै ॥
 जिन पर श्री हरि कृपा सतोगुरा चित्त सुहावै ॥
 छोड़ि सकल भ्रम बाद एक श्री पति गणवै ॥
 बलदेव सुकवि बड़ भागते ज्ञान उदै आनंद लहै ॥
 तब सकल चराचर जीव को विश्वरूप दर्शन कहैं ॥५॥

दोहा

श्री गीता को सार यह सकल उपनिषद सार ॥
 कीनो श्रीमत भागवत श्री शुकमुनि निरधार ॥१२॥
 सो भाष्यो या ग्रंथ में जदपि पारसी मादि ॥
 अपनो काम महरव सों कबू रख सों नाहि ॥१३॥
 जानि स्वाद चुप हो रहैं निरखें श्री हरि रूप ॥
 सब सों राखें प्रीति उर कहा रंक कह भूप ॥१४॥
 ज्ञान बिना नहि मुक्ति है आज्ञा वेद सुजान ॥
 बिना भक्ति भगवान की दुर्लभ जानो ज्ञान ॥१५॥
 बिना कृपा गुरु देव की श्री हरि भक्ति न होय ॥
 ज्ञान शोध चाहत लह्यो सेवो गुरु सब कोय ॥१६॥

जब श्रीगुरु की कृपा तें उपजै ब्रह्म ज्ञान ॥

तब चाहै जैसे रहौ महापुनीत बखान ॥१७॥

छप्पे

चाहौ ऐंठि बजार करौ ब्योपार सुभाई ॥

चाहौ दरबो नृत्य एक रूपहि मन लाई ॥

चाहौ गज आरुढ़ होय नृप न्याउ सम्हारौ ॥

चाहौ कर बन बास एक आतस चितधारौ ॥

बलदेव सुकवि आनन्द नित चित चाहै जित जाइये ॥

जगदीश कृपा गुरु भक्ति चित ब्रह्म ज्ञान तब पाइये ॥२३॥

अन्यच्च

जाको ब्रह्म ज्ञान महापावन तिहि मानौ ॥

जाको ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म मूरति कर जानौ ॥

जाको ब्रह्म ज्ञान संकल तीरथ अंग ताके ॥

जाको ब्रह्म ज्ञान मनोरथ पूरन वाके ॥

बलदेव सुकवि पावन सु कुल जहाँ जहाँ वह बगधरे ॥

सो होय भूमि पावन परम दास तासु मंगल करै ॥२४॥

॥ दोहा ॥

कहा इन्द्र पदवी कही कहा भूमि को राज ॥

बिन जाने हरि आत्मा सकल बंध को साज ॥२५॥

(इति भूमिका)

छप्पै

राम कुमार उदास नित्य दीनन दुखं हरता ॥

मम प्रेम में रहत भक्त मुद मंगल करता ॥

सुनत नित्य हरि कथा करत विप्रन को आदर ॥

बसत लक्ष्मी पुरी भारगोबवंश उजागरा ॥

करत मान जैन कबिन को मनधन सो अति हरषचित ॥

कैलाशचंद्र तिन के हृदय राम कृष्णब्रू बसहिं नित ॥

कवित्त

जैसी दृढ़ भक्ति नीकी सो है परमेश्वर में तैसी ही न करे

इनायत खुदा करे ॥ राम के कुमार आस केवल श्री

कृष्णचन्द्र पूरन प्रकाश ज्योति हिय में जगां करे ॥

आपू हो दीर्घ सदा कायम इक बाल रहे कृष्ण की कृपा

से जुदा व्याधिया खुदा करे ॥ बालकवि पुकार कहें गुरायन

की कद्र करें दुष्टमनान आप के कादफैया खुदा करे ॥

अथ मामुकीमाका उल्था ज्ञान प्रकाश लिख्यते

ترجیع بند

<p> رُخ بہ دنیا و دیں نمی آریم اوفتاده جدا ز گلزاریم گوهر درج گنج اسراریم فارغ از نافرمانی تباریم خادم حسادمان خستاریم محتشش را بحبان خریداریم توانک پیوسته سزاظمناریم هر دم از دیده خوئی همی باریم هر حسره مروده ہے داریم </p>	<p> ما مقیمان کوئے دلداریم بلبلانیم گز قضا و قدر مرغ شاخ درخت لاہوتیم بامید عبیر خاک درش بندہ بندگان مستانیم غم او را بدل ہمی خواہیم گویم او را بدل کہ یا ہو ہو تا مگر بار در گشتش یا ہم دیر گاہست گز بشارت غیب </p>
---	--

॥ चौपाई ॥

मीत गली के हम हैं वासी । जगन्नरु धर्म से रहें उदासी ॥
 हरि आज्ञा के प्रेषित पन्थी । परे बिहाय बाटिका अच्छी ॥
 बिहंग डारि निरगुन तरु केरो । मोती भेद डबा घर मेरो ॥

आसा रज दारे उनके री । नहिं ततार कस्तूरी हेरी ॥
 मत्तन सेवक सेवक खासा । मद मत्तन के दासन दासा ॥
 दुरव भीत को चित से चाहों । प्रान देउँ तिहिं अमहिं बिसाहों ॥
 चित से कहों वही वह भासे । हम हीं सेतिहिं भेद प्रकासे ॥
 तो उन के घर पेठन पाऊं । स्वांस स्वांस दृग रक्त बहाऊं ॥
 बहु दिन तें हरि प्रेरित बानी । नित प्रभात सुनियन सुरवदानी ॥

जो पाली

जग और घरम से रहें ओसी
 प्रे से सारै बाँका अच्य
 मृती बहिरु डबा गहर मिरु
 नहिं ततार कस्तूरी भरी
 मत्तन के दासन दासा
 पिरान दीवों तहिन शरमि सबाह
 हमि से तहिन बहिरु प्रकासे
 सुानस सुानस रक्त भावों
 नित प्रेरित सुनित सुक दानी
 हरि चिन्ति दास के म्हराव
 जो कुछ आवत दृष्टि में म्हराव

सित गली के हैं हम बासी
 हर आग के प्रेरित बच्य
 मत्तन डार नरकन त्रिकिरु
 आसा रज दारे कस्तूरी
 मत्तन सेवक सेवक खासा
 दुरव भीत को चित से चाहों
 प्रान देउँ तिहिं अमहिं बिसाहों
 चित से कहों वही वह भासे
 हम हीं सेतिहिं भेद प्रकासे
 तो उन के घर पेठन पाऊं
 स्वांस स्वांस दृग रक्त बहाऊं
 बहु दिन तें हरि प्रेरित बानी
 नित प्रभात सुनियन सुरवदानी

दोहा— हिय की आरिबन सोलखो भीत बिना नहिं कोय ॥
 जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

لب تو رشک رنگ مرجان است
بر سر لاله عنبر افشان است
عاشقان را بجای قرآن است
گوشت خوبی ترا بجوگان است
جای طوطی به شکرستان است
یارب این درو را چه دربان است
وصف حسنت بروں زامکان است
و مبدم خون زویده باران است
این سخن هر صبح گوینان است

رُخ تو غیرت گلستان است
و لب را سلیلت بخوشبوی
صفحه روئے تو بایت حلال
برگ ریحاں ترا به نسرین است
خط به لعلت و سیلے وارو
به نشد در دم از علاج طبیب
می نیارم زدن به صفت تو دم
تا شد از پیش دید نقش رخت
ببل شاخار گلشن قدس

मुख शोभा बन कुसम लजावै । मूंगा चहत अधर रंग पावै ॥
अलक कपोल सुगंध सुहाई । लाला पर अंबर छिरकाई ॥
सुन्दर मुख तिल राजत कैसे । बिन्दु मंत्र भृति पत्रहि जैसे ॥
नव कच मुख कपोल छबि खाने । गंद भलाई तुब चौगाने ॥
अधर निकट नव कच छवि पाई । तूती मिसरी ढेर सुहाई ॥
पीर न घटी वैद्य पचहारे । है हरि को औषधि दुख टारे ॥
बरन सको नहिं गुनन तिहारे । बाहिर सीमां रूप निहारे ॥
जब से तुब मुख छबि नहिं पाई । नैन रक्त वर्णा खरबाई ॥

पावन बाग डारि को पच्छी । बानी नित प्रभात कहि अच्छी ॥
मो नगा चेत ओर रंग पावै
लाले पर عنبر चहूँ कानि
बन्द मस्तर मस्तर पत्र ही जियो

کھ شو بھا بن کسم بجاوے
الک کپول سو گندہ سو ہائی
سند رکھ تل راجت کیسو

گیند بھلائی تَب جو گانے
طوطی مصری ڈھیر سوہائی
ہے ہر کو اوکھ دُکھ ہمارے
باہر سیاں روپ ہمارے
نیں رکت برکھا برکھائی
بانی نت پر بھات کہہ اپھی

نوج مکھ کیول چھب کھانے
ادھر نکٹ تَب کچ چھب پانی
پیر تہ گھٹی بید تچ ہارے
بدن سکوں نہیں گھنن ہمارے
جب سے تَب ہوکھ چھب نہیں پانی
پاون باغ ڈار کو پچھی

ہرچہ بینی بدایاں کہ منظر دوست
جو کچھ آوت درشت میں بسو روپ ہر ہوتی

کہ بچشماں دل میں جز دوست
ہستی کی آنکھن سون لکھویت بنا نہیں کوئی

॥ दोहा - हियकी आरिवन सों लखों मीत बिना नहिं कोय ॥

॥ जो कुछ आवत दृष्टि में विष्व रूप हरि होय ॥

لیک در چشم من نمی آئی
بوالعجب ماندہ ام کہ ہر جانی
ز آنکہ مشہور تر بہ یکستانی
چہرہ ہائے بستان یمنائی
خرم آن دم کہ پردہ بکشائی
گاہ پسری و گاہ برنائی
گاہ موجی و گاہ دریائی
در چپ و راست زیر و بالائی
از دل زار صوت شیدائی

بجہاں در ہمیشہ پیدائی
اے کہ دریچہ جاندارے جا
در لباسِ دُونی نمی گنجی
روشن از آفتاب طلعت تو
از جمالت کہ بے مثال آمد
گاہ مستی و گاہ ہشیاری
گاہ دُری و گاہ غواصی
اندرون و برون از پس و پیش
دوش گویندہ ادا میگرد

॥ जग में राजत सदाँ सुहाये । हमरी दृष्टि न कबहूँ आये ॥

॥ एक ठौर नहिं ठीक तिहारो । अचरज है सब ठौर निहारो ॥

द्वैत भाव तुम में नहिं दसे । प्रगट एक अद्वैते सरसे ॥
 तब मुख रवि सब जगहिं प्रकासे । बहु सुरूप तुमहीं से भासे ॥
 रूप अनंत तेज क्यों गाऊं । सुखी होऊं तब दसन पाऊं ॥
 मादुकता कबहुं बुधिमानी । कबहुं बुढापौ कबहुं ज्वानी ॥
 मोती कबहुं भिरंजियां जानो । लहर कहूँ पुनि सिंधु सुमानो ॥
 भीतर बाहि पीछे आगे । बाम सूध अध ऊरध लागे ॥
 काल राट कूकत एक प्राणी । आरति चित्त प्रेम मय वानी ॥

हमरी درشت نہ کہوں آئے	جگ میں راحت سداں سوہائے
اچھڑج ہے سب ٹھور ہمارو	ایک ٹھور نہیں ٹھیک ہمارو
پرگٹ ایک ادویت سر سے	دویت بھاؤ تم میں نہیں در سے
ہو سُرُوپ تم ہی سی بھاسے	تب کہ رب سب جگنہ پرکاسے
سکھی ہوں تب درشن پاؤں	روپ انت تیج کیوں گھاؤں
کہنوں بڑھاپو کہنوں جوانی	مادکتا کہنوں بدھ مانی
لہر کہوں پُن سندھ سومانو	موتی کہنوں مرجیاں جانو
بام سودھ ادھ اوردہ لاگے	بھیترا ہر پیچھے آگے
آرت چت پریم می بانی	کال رات کوکت ایک پرانی
ہرچہ بینی بداں کہ منظر اوست	کہ بچستان دلیں بسیں جز دوست
جو کچھ آوت درشت میں بسور دپ ہر ہوتی	ہستی کی آنکھن سون لکھویت بنا نہیں کوئی

دوہا- हिय को आरिवन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥

जो कुछ आवत दृष्टि नें विश्व रूप हरि होय ॥

مشکویت گوشہ گزار گوشہ زاهدانہ باز گزار

خلق را نیست حاجت عطار
 بکنم سجده بر در حنّار
 خوشش در آیم بخلق زَنّار
 وقتا رتبا عذاب النار
 طعن میزند به گلزار
 کوه و صحرا و کوچه و بازار
 مردم دیده اولی الا بصر
 می شنیدیم از در و دیوار

عطر بیزست باد نوروزی
 چه عجب نگر دریں چنین ایام
 بد کسبم جسته دو تار و یه
 گل ناراں که در خزاں میخواند
 هر دم از باد صبح بر آتش
 از گل تازه عنبر افشان است
 روشن ست از نظاره نرگس
 چوں به بستان سراسی در فتم

मृग मद गंध बाग में छाई । तज पारबंद कोन गृह माई ॥
 बसी सुगंध बसंत वियारी । जगत सुगंधी हाट बिसारी ॥
 नहिं अचरज या समय मफारे । करें प्रनाम कलाल द्वारे ॥
 छल को घोला दूर उतारों । जान जनेऊ कंठ सुधारों ॥
 फूल अनार कहत पत भारे । पाप अरिन से राख मुरारे ॥
 ब्यार लागि अगनी सिर भारे । फूल अनार सु ताने मारे ॥
 नव फूलन से महक अपारा । बसी गली गिरबन बाजारा ॥
 तुब नैनन के तेज प्रकाशे । सब जानिन के आरिवन भासे ॥
 ऐसे बाग गये सुख खानी । भीति द्वार से सुनि यह बानी ॥

سج پا کشت کون گره بھالی
 جگت سو گندھی پاٹ بھاری
 کروں پر نام کلال دوارے
 گیان جیو کٹھ سو دھاروں

مرگ ک گندہ باگ میں چھالی
 بسی سو گندہ بسنت بیاری
 نہیں اچرچ یا سہیں منجھارے
 چھل کو چولا دور اُتاروں

پاپ اگن سی را کہ فرارے
پھول انار سوٹھنے مارے
بستی گلی گری بن ماجہارا
سب گیا نن کے آنکھن بھارے
بھینٹ دوار سے سنی یہ بانی

پھول انار گنت پت جھارے
بیار لاگ اگنی سر بھارے
نو پھولن سے جھک اپارا
تُب نینن کے تیج پر کا سے
ایسے باگ گئے سکھ کھسانی

ہر چہ بینی بداں کہ منظر اوست
جو کچھ آوت درشت میں بسور وپ ہر ہوتی

کہ بچشان دل میں جز دوست
ہستی کی آنکھن سوں لکھویت بنا نہیں کوئی

دوہا - हिय की आरिबन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

نہ لا الہ الا ہو
شاہداں را بہانہ دربارہو
عقل را نیست زور در بازو
سالہا شد کہ می کند کو کو
پیش بت سجدہ می کند ہندو
وی زبوںے تو تا فنا خوشبو
بہ بیا باں نہادہ رخ آہو
در رہ عشق یک دل و یک رو
بالیقیں بسخنی تو از ہر سو

میرسد ایں ترانہ از ہر سو
ناوک اندر کمان خود وارو
تا کند پنجہ با مبتاز عشق
جان من بے رخ تو فاختہ وار
سر بہ پیش تو می نہم ہر دم
ای زبوںے تو دیدہ روشن
دید چون چشم شیر گیر ترا
زاہدا بگذرا دوی و درآ
گر ترا گوش جاں نہا شد کہ

सब दिशि सें सुनियत यह बानी । पूजनीय है वही सुभानी ॥
नावक सर कामान निजधारी । करत सुभूमिसि प्रिय मनहारी ॥
प्रेम साथ पंजा जो करई । नहीं सामर्थ्य इती बुधि धरई ॥

तुब दर्शन विन भयो परेवा । बरसन से कू कूटलेवा ॥
 छिनि प्रति तुब आगे सिर धारी । मूरति आगे यथा पुजरी ॥
 तब मुख सब के नैन प्रकाशे । कच सुगंध से मृग मद धाषे ॥
 तुम्हरे नैन सिंह वश कारी । देखि हिरन भागे बन भारी ॥
 पंडित छोड़ दुई इत आओ । प्रेम पंथ इक मुख चितिलाओ ॥
 जो न कान तुब बहरे प्राणी । न हचे कर सुन चाहं दिशि बारी ॥

<p> सब देश से सुनित ये बानी नादक सरकान नज्र देहारी प्रियम साहब नज्बे जो करानी तब दर्शन बन भयो प्रियो चहिन प्रियत तब आगे सर देहारी तब नम्र सब के नैन प्रकाशे नम्र नैन सनक नम्र कारी पंडित चोड़ दूनी इत आओ जो न कान तब बहरे प्राणी </p>	<p> प्रीति है वही भक्तानी कृत सुख प्रेम प्रीति मारी नैन सामरत अति बद्ध देहारी बदन सैन को को रत लो मूरत आगे यथा पुजारी कच सुगंध से मृग मद धाषे देखि हिरन भागे बन भारी प्रिय पंथ इक मुख चितिलाओ जो न कान तुब बहरे प्राणी </p>
---	---

<p> हरि प्रीति भवां के मुख अद्वैत जो कछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥ </p>	<p> के बचनान् वल मयि जे दोस्त भैली की आँखें सों लखीत बना नैन कोनी </p>
--	---

<p> दोहा- हिय की आरिबन सो लखो मीत बिना नहिं कोय ॥ जो कछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥ </p>	<p> बाग रा मरुदा बहार आद हरि प्रीति भवां के मुख अद्वैत </p>
--	--

از شکنجائے طرہ سنبیل	بوئے گیسوئے آن نگار آمد
چشم ز گس ز ساغر لاله	باده نا دیده در خار آمد
صبح دم بر سر عروس چین	ابر نوروز در نشا آمد
چهره گل بچشم غنایاں	چوں رخ یار غمگسار آمد
در گلستان نسیم عنبر بو	هر حسره گاه مشکبار آمد
سرخ شد پای قمری از گل سرخ	زاع را در دو دیده خار آمد
صوفیاں را بصد صفای گفت	تالہ کنز دل هزار آمد

मुद सुधि मधुजुवागने पाई । कस्तूरी ततार महकाई ॥
 सब दिशि पक्षी बोल सुहाये । बन बिहंग बन रोवत आये ॥
 तुरी सुम्बुल सुधर बंकाई । सुगंध अलक प्यारे कीलाई ॥
 नरगिस नैन कटोरा लाला । बन मद के राँते मतवाला ॥
 प्रातसीस दुलहन फुलवारी । धन संवत सर मुक्तावारी ॥
 देवत फूल जबै बिरही जन । सुरति करत मुख मीत मुदित मत ॥
 प्रात सुगंधित बाग सुवायू । सब दिशि मृग मदही महकायू ॥
 फूल संग कुमरी पग लाले । काग दुष्टि कंटक ज्यों सल्ले ॥
 जानिन सो अति साह्र हरानी । बुलबुल चित सो निकसीवानी ॥

کتوری تار مکاری	مد سودھی مد ہو جو باک نے پانی
بن بہنگ بن روت آئے	سب دس پتھی بول سوہائے
سوگندہ اک پیارے کی لائی	طرہ سنبیل سگر بنکاری
بن مد کے رانتے متوالا	ز گس نین کٹورا لاله
گھن سمبت سر مکتا واری	ہرات سیس دولہن پھل واری

सुत्र करत नकुमित भूत मन
सब दश मरु नदही मकाय
काग दरुश कनक ज्यो साले
बिल चत सों नकुसी बानी

विकेत प्योल ज्ये बरही जन
प्रात सुगन्धत बाग सोपाय
प्योल सनक मरु पग लाले
किया न सों अत सत बकानी

हर च मनी बदा स क म्परावस्त
जो क्छ आवत दृष्टि में लोप हर मनी

क बकशान दल मीस ज्ये दोस्त
मनी की अकन सों लोप बना नही कोनी

दोहा - हिय को आरिखन सों लखौ मीत बिना तहि कोय ॥

जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

सुख आ बदार सिगोय
बादल होशियार सिगोय
बाज मशक ततार सिगोय
खर जलत यार सिगोय
गला नुक खार सिगोय
कसत नो बहार सिगोय
असर अकसार सिगोय
हर के मार मार सिगोय
सबद म नार नार सिगोय

हर के वस्त्र नगर सिगोय
पिर मा सरु عالم मसी
खट्वा औरा खरु न्या दानी
हर सगर के नसिम नो रोजी
बागिया पेश गल बे मसिम गल
बिल अंदर खरा बशाख कन
सरो दर बाग वस्त्र बालाश
चों कश्म जलत एनर मश
मरु दस्ता सार सरो वस्त्र

जो कोई गुन प्यारे के गावे । बात भली आनंद उपज्यवे ॥

गुरु हमार भेद हरि शरवे । मत्त होय ज्ञानी सों भारवे ॥

उहि मुख कच को बुधि भ्रम खरवाई । फेर कहत मृग मद महकाई ॥

प्रात समय की वायु बसंती । अलक मीत की सुधि दरसंती ॥

فूलن سوں بسانت میں مالاہی । کھٹک پیر کھت ہیسالی ॥

پچھی کھت سمی پت ماری ۔ بڑھ ڈار سوں کھا بھاری ॥

سوں بڑھ تہی کھت بڈاڈ ۔ آہ دینتا پگٹ دیراڈ ॥

مہکھت اٹک گھوں میں مہاڈ ۔ لوگ کھت ناگھت سماتاڈ ॥

کھٹکھٹ بھد باہ کو جانی ۔ پرات نین بھر اچھت بانی ॥

بات بھلی آئند او پچاؤ

مت ہوی گیانی سوں بھا کھے

پھر کھت مرگ ۔ مہکا فی

اٹک میت کی سڈھ دو سنتی

کنٹک پیر کھت ہیس سالی

برودہ ڈار سوں کھا بھاری

آپ دین تا پیر گٹ دیکھا فی

لوگ کھت ناگھت سماتی

پرات نین بھر اوچھت بانی

ہرچہ بینی بدال کہ منظر اوست

جو کچھ آوت درشت میں بھو پھری

جو کوئی گن پیارے کی گاؤ

گرو ہمار بھید ہر را کھے

دہی کھ کچ کون بدہ بھرم کھا فی

پرات تے کی باؤ بستی

پھولن سوں بھت میں مالی

پچھی کھت سمیں پت جھاری

سروں پرچہ تہی کھت بڑائی

کھت اٹک گھوں میں بھا فی

کو کھت بھید باگ کو گیسانی

کہ بچھان دل میں جزدوست

ہے کی کھن سوں کھوت بنا نہیں کوئی

دوہا - ہیس کی آئین سوں لکھو میت بھتا نہ کی ॥

• جو کھت آوات دھت میں ویبھ رھت ہوی ॥

جان ہر یک فوادہ درتا پاک

ہمہ را کو رویدہ اوراک

میشود رام تو سن اٹلاک

ای زہر تو عالمی عیناک

برجماک و حلال چہرہ تو

شہسوارایت عشق گز ہمیش

نہند پا بکوحہ باطل
زہر نوشندگان جامِ غمت
تدکِ عشق تو عاشقانت را
آہ من سوخت استخوان مرا
خنجرِ عشق یار بارِ دگر
بشنوی از زبان ہر موجود

ہر کہ در راہ حق بود چالاک
می سخا ہستند از کسے تر پاک
می کشد از کسے ندارد پاک
آتش زو بخیزد من خاشاک
میکند سینہ ہائے یاراں چاک
ساعتے گر ز غیر گردی پاک

پیارے توم کو सब जग चाहे । तरबत सब को चित्त सदा है ॥
रूप बड़ाई मुख को जानै । दृष्टि समझ की अंधी मानै ॥
ऐसो भीम प्रेम असवारा । सेवक होत अश्व शिशु मारा ॥
भूटे मग पग कबहूँ न धारे । जो हरि मारग चलने हारे ॥
तुब बियोग विष जिह मुख लागे । काहूँ सोँ अमृत नहिं मांगे ॥
प्रेमिन कोँ तुब प्रेम सिपाई । मारत काहूँ सोँ न डराई
बिरह अगिन मम हाड़ जराए । गरी फूस ज्यों अगनी पाये ॥
बारम्बार जु प्रीत कटारी । लगत हिये प्रेमिन के भारी ॥
हर इक विद्यमान सुन बानी । घड़ी एक तजि और कहानी ॥

پیارے تم کو سب جگ چاہے
روپ بڑائی تم کو جانے
ایسوی بھیم پریم اسوارا
جھوٹے نگ پاک کہوں نہ دھار
تب بیوگ تکہ جی تم لاگے
پریم کو تب پریم سپائی

تریت سب کو چت سدا ہے
دریشت سمجھ کی آندھی مانے
سیوک ہوت استوشش مارا
جے ہر مارگ چلنے ہارے
کا ہو سوں افرت نہیں مانگے
مارت کا ہو سوں نہ ڈرائی

گر می پھونس جیوں اگنی پائے
لگت ہیہ پریمین بکے بھاری
گھڑی ایک تیج اور کسان

برہ اگن مم ہاڑ جہڑے
بارم بار جو پریت کٹاری
ہر ایک بزمان سن بانی

ہر چہ بینی بدراں کہ منظر اونست
جو کچھ آوت درشت میں بسوروپ ہر ہوئی

کہ بچشمان دل میں جز دوست
ہے کی آنکھن ہوں لکھو سیت بنا نہیں کوئی

دوہا—ہیہ کی آری بن سوں لارو مہیت بیانا نہہی کوہ ॥
جو کھو آوات درشت میں ویسھ روپ ہری ہوہ ॥

جام جمشید را زنی برہم
مالکان بلا د عشم در دم
رشتہ دل شای نگر دوئم
می سخا ہند از کے مرہم
عاشقاں را بروں ازین عالم
حرم عشق را شوی محرم
دامن عیش را نگیری کم
نظر کن بنظر آدم
بشنوی از نوائے نالہ ہم

گر خوری جہڑے ز ساغر عم
ملک شادی ہی دہند بباد
گر بہ در یاد را وقتند بوجد
درد مندان زخم تیغ فراق
برترین عالمیست گزوانی
چوں بخود خویش را حرام کنی
تاندرد بلا گریبانت
گر بجوئی صفات ذات خدا
ساز عشق از بچنگ درگیری

پ্রেम घूंट इक कंठ उतारो । जमशेदी प्याले सिलमारो ॥
सकल देस सुख छिन में त्यागे । प्रेम दुःख मन जिन के लागे ॥
प्रेम मगन जो जल गिर जाहीं । गुदरी धागा भीजै नाहीं ॥
बिरहा खड़ग धाऊ दुख लागे । किहुं से सो मल्हम नहि मांगे ॥
सब से ऊंचे पद सुख लूटे । या जग से प्रेमी जब छूटे ॥

लखे अपन औ आपगंवावे । प्रेम भवन के भेद हि पावे ॥
 जोलों दुरव न अंचल फारे । तोलों हू हरि मिलन न धारे ॥
 जो हूंदत गुन हरि के भाई । मानुष तन निरखो मन लाई ॥
 बाजो प्रेम लेउ कर जानी । सुन सब दिशि अनहद यह बाणी ॥

<p> جمشیدی پیا لوسل مارو پریم دکھ من جن کے لاگے گداری دھاگا بھیجے ناہیں کہوں سے سو غم نہیں مانگے یا جاگ سے پریمی جب چھوٹے پریم بھون کے بھیہ ہی پاؤں تو لوہوں ہرمن نہ دھارے مانگہ تن نہ کھو من لائی سن سب دس اٹھد یہ یانی ہرچہ بینی بداں کہ منظر اوست جو کچھ آوت درشت میں بستورپ ہرہونی </p>	<p> پریم کھونٹ ایک کٹھ اوتارو شکل دیس سکھ چھن میں تیاگے پریم مگن جو جل گر جا ہیں برہا کھڑک گھاؤ دکھ لاگے سب سے اونچے پر سکھ لوٹے جہی اپن پو آپ گماوے جو لوں دکھ نہ آ پخل پھاڑے جو ڈھونڈت گن ہر کے بھائی ! جو پریم لیو کر گیسانی کہ بچستان دل میں جزدوست ہے کی آنکھوں لکھویت بنا نہیں کئی </p>
---	---

दोहा— हिय की आरिबन सों लखी मीत बिना नहि कोय ॥

जो कुंछ आनत दृष्टि में विषय रूप हरि होय ॥

<p> دامن شادی آری اندر چنگ جان من کے ہی مرکب لنگ شیشہ ننگ را زنی بر سنگ راست بازاں نمیکند درنگ </p>	<p> از غم و درد گریانی تنگ در مقامات منزل جاناں گر خوری خبر عیلامست را بر بساط بلا بسر بازی </p>
--	---

بعد ازاں کن براہ عشق آہنگ
مانی از خود نہاں کند از تنگ
کفن کشتگاں نیا بد رنگ
بیکس و باکے نہ صلح و نہ جنگ
بخیر از میں از دہان وحش و پلنگ

اول از پردہ خودی بدر آئے
گر بہ بیند نگار حسانہ عشق
عشق خونریز دشنہ ایست کرد
اوستا ویم در میانے
کلبائے بروں نمی آید

جو دُرخ پُرم پَنّی سہی جی ہو ! سُرُخ کو اُنچل ہاتھ سولے ہو
دُور دھام پیتم کیوں پہ ہو ! لنگڑے چوڑے کین چڑجی ہو ॥
ننڈا گھونٹ پیو گے جب ہی ! تہی ہو لاج لوک کی تب ہی ॥
سَنکٹ کھیل جو سر نہ کھیلے ! اہنگار پہلے تہی دیجے ॥
پُرم بھون سو بھا لکھ پاوے ! پُرم کٹار لگے اور جھکے ॥

جو دُکھ پُرم پَنّی سہی جی ہو
دُور دھام پیتم کیوں پہ ہو
ننڈا گھونٹ پیو گے جب ہی
سَنکٹ کھیل جو سر نہ کھیلے
اہنگار پہلے تہی دیجے
پُرم بھون سو بھا لکھ پاوے
پُرم کٹار لگے اور جھکے

سکہ کو اچل ہاتھ سولے ہو
لنگڑے گھوڑے رکن چڑجی ہو
تہی ہو لاج لوک کی تب ہی
سانچے پُرمی دیر نہ کیلے
پچھے پُرم پَنّی پگ دیجے
مانی اپنہ مان گداوے
انیرانت رنگے نہیں تنکے

کا ہو سون نہ میل نہیں میرا
بخیر چلتی ہی سناوے

ہرچہ بینی بداں کہ منظر اوست
جو کچھ آوت درشت میں بسوروپ ہر توفی

दोहा - हिय की आँखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥

जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

راحت اندر دل خراب رسید
 میں کہ آن شورش بے نقاب رسید
 گویا سنج را کباب رسید
 از حیا بر رخس گلاب رسید
 ایس حکایت بشیخ و شاب رسید
 بر سرم از پے صواب رسید
 یارم از خانہ بے حجاب رسید
 آہ من چوں با ہتاب رسید
 من دیوانہ را خطاب رسید

मीत जु मद भाजन लै आयो । दुरित चित्त में आनंद पायो ॥
 चंद्र मुखी मुख अंचल लाये । देखि निडर मुख खोले आये ॥
 बरुनी देखत मोमन गयो । भुँज आभिष सलाकर रहि गयो ॥
 फूल गुलाब कपोल निहारे । लागी लाज प्रस्वेद सुधारे ॥
 बाँहत गुरु मेरो बात रुनहिं । वृद्ध युवा या कथाहि वरनहिं ॥
 मीतम मम सिर लिये कटारी । मारन कांज पुन्य हितकारी ॥

نہو بھار سر نیرنگ سہاویو । لاج بیا دھ سے پیہ آویو
 آگین داگ وا کے اُرد سے ۔ ہا ی شبد م م شاشی جو پر سے ॥
 تیا گی راہ بُدی من مانی ۔ مو سیرِی سوں کھی سو وانی ॥

<p>دو کھت چت میں آ نند پایو دیکھ بند رکھ کھ کھو لے آئے بھوج آ کھ سلاک رہی گویو لاگی لاج پر سوید سو دھارے بر دھ جو بایا کھتا ہی بر نے مارن کاج پن ہتکارے لاج بنا گھر سے پیو آویو ہائے شبد م م شش جو پر سے ستری سوں کھی سو بانی</p>	<p>ریت جو مد بھا جن لے آویو چند رکھی کھ اُنچیل لائے برونی دیکھن سو من گویو پھول گلاب کیوں ہمارے چا نہت گرو سیرو با تر نہتے پر یتم م سر لے کٹاری نیو چھا ور سر کھنگ سو ہایو اگن واگ وا کے اُرد سے تیا گی راہ بُدھ من مانی</p>
---	--

<p>ہر چہ بینی بداں کہ منظر اوست جو کچھ آوے درشت میں شور و ہر ہونی</p>	<p>کہ بچستان دل میں جزدوست ہے کی آنکھ سوں لکھو بیت بنا نہیں کوئی</p>
--	---

دوہا - ہیا کی آری بن سوں لارو مہت بیا نہن کو ی
 جو کھ آوات دھڑی میں بھیرو رپ دھڑی ہو ی ॥

<p>راہ شہر دو انید انیم می ندا نیم تا چہ مرغانیم گہ امیریم و گاہ دربانیم گاہ ترسا و گہ مسلانیم گاہ در دیم و گاہ در مانیم</p>	<p>در بیا بان مرد حیرانیم اوفتادیم در قفس ناگاہ گہ حیرانیم و گاہ معموریم گہ جو دیم و گاہ زنا ریم گہ طبعیم و گاہ بیساریم</p>
--	---

گاہ گریاں و گاہ خند انیم
گاہ ناظر بر دے خواب انیم
بیل گلشن حسد اسانیم
رقی غیر الیم نید انیم

گاہ صوفی و گاہ رشتا صیم
گاہ منظور چشم عشا قیم
گر ہند و ستاں شدیم چہ باک
تا بیا موخیم اجد عشق

پورے دُ:رِخ بن بھم من مانو । باٹ نگر آو کھ نہیں جانو ॥
اکسمات پنجرہ فسانے । کوپکشی ہوں ہم نہیں جانے ॥
کبھوں کجڑ کبھوں بے سے ہوں । راجا پونی پھر دے سے ہوں ॥
کبھوں پارسا دُ:ج بے کبھوں ۔ ترسا کھوں مسلمان کبھوں ॥
کھوں بے رُ:ج رُ:جی کھوں جانو ۔ کبھوں پیر آو کھ کھوں مانو ॥
کھوں ساڈھ کھوں ناچن ہارے ۔ کھوں رُ:ج بے کھوں ہنس تے سوہارے ॥
کبھوں پرمانی کے دُ:رِج واسی ۔ کبھوں لکھ تے رُ:ج کی راسی ॥
ہند بے کھوں ڈر نہ ہانہ کو ۔ بھنگ باٹیکا رُ:ج راسان کو
آو کھ سیدو پرم کی جاتے ۔ آو کھ آو کھ نہیں جاتے ॥

باٹ نگر آو کھ نہیں جانو
کوپکشی ہوں ہم نہیں جانے
راجا پونی پھر دے سے ہوں
ترسا کھوں مسلمان کھوں
کھوں پیر آو کھ کھوں مانو
کھوں رُ:ج بے کھوں ہنس تے سوہارے
کھوں لکھ تے رُ:ج کی راسی
بھنگ باٹیکا رُ:ج راسان کو

پری دُ:رِج بن بھم من مانو
اکسمات پنجرہ فسانے
کھوں آو کھ کھوں بے سے ہوں
کھوں پارسا دُ:ج بے کھوں
کھوں بے رُ:ج رُ:جی کھوں جانو
کھوں ساڈھ کھوں ناچن ہارے
کھوں رُ:ج بے کھوں ہنس تے سوہارے
کھوں لکھ تے رُ:ج کی راسی
بھنگ باٹیکا رُ:ج راسان کو

اوٹم سبھی پریم کی جب تین
اچھر اور نہ جانت تب تین

کہ بچستان دل میں جز دوست
ہرچہ بینی بداں کہ منظر دوست
ہے کی آنکھوں میں کھوسیت بنا نہیں کوئی
جو کچھ آوت درشت میں بشور و پ ہر موی

دوہا - ہوی کی آراوین سولہوی مہت بیانا نہی کوہ ॥

جو کچھ آوت درشت میں بشور و پ ہر موی ॥

ہرگز را دیدہ شد بروئے تو باز
آمد از عشق خو برویاں باز
وانکہ از جام عشق شد مدہوش
ہیچکای ہی ہوشش نامد باز
گر بخواہی کہینیش بر دوز
دیدہ را از غیمہ او چوں باز
حرف در ماں ز لوح سینہ بشوی
نامہ درو چوں کئی آغاز
از دل و جاں نثار ناوک دوست
جاں فدا میکنند اہل نیاز
گر بچویند باز دیو یا بند
دل محمود را بزلت ایاز
چوں نظر میکنم بنقش رخت
پر تو حق بہ سینم اندر باز
دوش خود را بخواب میدیدم
پیش دولت سرای صفہ را از
بر زوم تختہ درش ناگاہ
از درویش بر آمد این آواز

जा काहू तुव मुख लखि पायो । रूप वंत को प्रेम भुलायो ॥

प्याली प्रेम लूके मद पाये । ते कबहू नहिं संगिया लाये ॥

जो चाहत पिय दृग सीं राखो । ज्यों सचान और न अभिलारो

हिय से सब उपचार बिसारो । दुख सीखत बउर में धारो ॥

उहि नावक पर तन मन वारो । करत प्रारा नौ बावर प्यारो ॥

जिन दूड़ो पायो चित कूदहि । अलक अयाज चित मह मूदहि

महमूद गजनी का बादशाह था जिसने हिन्दुस्तान पर हमले किये और अयाज उस का गुलाम और मशक था ।

جوتوہ मुख کی کھبی میں پےروں । بھڑا رُپ فیر بٹ مے دےروں ॥

کال رات سہنے دھلاگے । آہ ہیلر جانہی گرہ آگے ॥

کر کپاٹ کاکے پے مارے । مہتر سے یہ بچن اُچارے ॥

جا کا ہو تب کھ کھ پایو
پسالو پریم چھکے مد پائے
جو چاہت پی درگ سیں راکو
رہے سے سب او پچار بسارو
وہ ناک پر تن من مارو
جن دھونڑو پا یو چت کو دھی
خو تب کھ کی چھب میں پیکھوں
کال رات سینے درگ لاگے
کر کپاٹ واکے پے مارے
کہ بچشان دل میں جز دوست
ہے کی آنکھوں لکھیت بنا نہیں کوئی

روپ و نت کو پریم بھولا یو
فی کہوں نہیں سنگیا لائے
جیوں سچان اورن ا بھلا کو
دو کھ سیکھ تب اور میں دھارو
کرت پران نو چھاور پیارو
اکٹ ایاز چت محمودھی
براہم روپ پھر گھٹ میں دیکھیں
آپ ہی لکھ گیانی گرہ آگے
بھتر سے نہ بچن اُچارے
ہرچہ بینی بداں کہ منظر ا دست
جو کچھ آوت درشت میں بستور وپ ہر تونی

دوہا- ہیر کی آریون سوں لہو مہتر بیکانہ کوہ ॥

جو کھو آریون دھری میں دھری رُپ ہر ہوہ ॥

خانہ شادی از رخت آباد
نقش شیریں ز دل کند فرہاد
در جہاں ہیچ بندہ آزاد
از ازل تا ابد ندید و نہ زاد
تو اغم زدن دم ایراد

ایدل دوستان بروے تو شاد
گر بہ بید لبان شیرنت
ہرگز از بند گیت سر نکشد
مادہ ہرچوں تو نہ زندہ
گر قبولم کنی و گر مردود

شمع عشق تو بلك دلم می فزاید ز حد یروں بیداد
 پیش محراب طاق ابرویت سرور نیست آنکه سر نهاد
 دی بدیوان عشق در رفیتم تا زنا دیدنت کنم مشرباد
 ہمدراں دم سروش مرده گزار از سر لطف این ندانم داد

तुव मुख देखें मीत सुबारी । तुव मुख जग को मंगलकारी ॥
 तुम्हरे अधरा मृत लखि पावे । शीरी को फरहाद भुलावे ॥
 जा को तुम्हरी भक्ति न होई । जग स्वतंत्र सेवक नहिं कोई ॥
 तुम सो सुत जग मात न जायो । आदि अंत लों दृष्टि न आयो ॥
 चाहे अपनावे या त्यागे । बोल सकों नहिं अधिक सुआगे ॥
 मम मन देस प्रेम कुतबाला । करत अतोल अनीत बिहाला ॥
 तुम्हरी भूवां की लखि नाथा । को राजा नहिं नायो माथा ॥
 काल गयो जु प्रेम दरवार । बिन देखे की करों पुकारा ॥
 तबही जबराईल बधाई । कृपा दृष्टि यह देर सुनाई ॥

تب کہ دیکھے میت سکھاری تب کہ جاک کو منگل کاری
 مہرب اُدھر اُمڑت لکھ پاوے شیریں کو منہ ہاد بھولاے
 جا کو مہتری بھگت نہ ہوئی جاگ سو تنتر سیوک نہیں کوئی
 تم سوست جاگ مات نہ جایو آد انت لوں در شط نہ آوی

* फरहाद शीरी पर आशिक छा उसने पत्थर में बसूले से नहर मुलाकात की
 शर्त पर निकाली थी - माशुक के मरने पर बसूला मारकर मर गया ॥

+ जबराईल खुदा का फरिश्ता है जो पैगम्बरों के पास खुदा का पैगा भलाता है

جो तुब मुख की छवि में पेरवों । ब्रह्म रूप फिर घट में देखवों ॥

काल रात सवने दृग लागे । आप हिलख जानी ग्रह आगे ॥

कर कपाट बाके ये मारे । भीतर से यह बचन उचारे ॥

روپ و نت کو پریم بھولا یو	جا کا ہو تب مکھ مکھ پایو
تی کہوں نہیں سنگیا لائے	پسالاو پریم چھکے مد پائے
جیوں سچان اورن ا بھلا مکھ	جو چاہت پی درگ سیں راھو
دو کھ سیکھ تب اور میں دھارو	رہے سے سب او پچار بسارو
کرت پران نو چھا ور پیارو	وہ نادک پر تن من مارو
اکلے ایاز چیت محمودھی	جن دھونڑو پایو چت کو دھی
برہم روپ پھر گھٹ میں دکھیں	خو تب مکھ کی چھب میں پکیوں
آپ ہی لکھ گیسانی گرہ آگے	کال رات سینے درگ لاگے
بھیت سے نہ بچن اچارے	کر کپاٹ وا کے پئے مارے
ہرچہ بینی بدیاں کہ منظر ا دست	کہ بچشمان دل مبیں جز دوست
جو کچھ آوت درشت میں بستور روپ ہر تونی	ہئے کی آنکھوں لکھت بنا نہیں کوئی

دوہا- हिय की आरिखत सों लखो मोत बिनानहिं कोय ॥

जो कबु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

خانہ شادی از رخت آباد	ایدل دوستان بروے تو شاد
نقش شیریں ز دل کند فرما د	گر بہ بید لبان شیرنت
در جہاں ہیچ بندہ آزاد	ہرگز از بند گیت سر نکشد
از ازل تا ابد ندید و نہ زاد	مادہ ہر چوں تو نہ زندہ
تو اغم زدن دم ایراد	گر قبولم کنی و گر مردود

۱۲۔ محمود غزنین کا بادشاہ تھا جس نے ہندوستان پر حملے کئے اور ایاز اس کا غلام اور معشوق تھا ۱۲۔

می فزاید ز حد بیروں بیداد	شخص عشق تو بملک دلم
سرور نیست آنکه سر نهاد	پیش محراب طاق ابرویت
تا زنا دیدنت کنم شر یار	دی بدیوان عشق در رفیتم
از سر لطف این مدار داد	همدراں دم سروش مرده گزار

तुव मुख देखें मीत सुरबारी । तुव मुख जग को मंगलकारी ॥
तुम्हरे अधरा मृत लखि पावे । शीरीं को फरहाद भुलावे ॥
जा को तुम्हरी भक्ति न होई । जग स्वतन्त्र सेवक नहिं कोई ॥
तुम सो सुत जग मात न जायो । आदि अंत लों दृष्टि न आयो ॥
चाहे अपनावे या त्यागे । बोल सकों नहिं अधिक सुआगे ॥
मम मन देस प्रेम कुतबाला । करत अतोल अनीत बिहाला ॥
तुम्हरी भूवां की लखि नाथा । को राजा नहिं नाथो माथा ॥
काल गयो जु प्रेम दरवारा । बिन देखे की करें पुकारा ॥
तब हीं जबराईल बधार्ई । कृपा दृष्टि यह टेर सुनार्ई ॥

تب کج جگ کو منگل کاری	تب کج دیکھے بیت سکھاری
شیریں کو فساد بھولا	مہرب آدھر اُمرت لکھ پاوے
جگ سو تنتر سیوک نہیں کوئی	جا کو مہری بھگت نہ ہوئی
آؤ انت لوں درِ شط نہ آوے	تم سوست جگ مات نہ جایو

+ फरहाद शीरीं पर आशिक छा उसने पत्थर में बसूले से नहर मुलाकात की
शर्त पर निकाली थी - मासूक के मरने पर बसूला मार कर मर गया ॥

+ जबराईल खुदा का करिश्ता है जो पैगम्बरों के पास खुदा का पैगा भलाता है

جوتو ب मुख की छवि में देखों । ब्रह्म रूप फिर घट में देखों ॥

काल रात सपने दृग लागे । आप हिलख जानी ग्रह आगे ॥

कर कपाट बाके ये मारे । भीतर से यह बचन उचारे ॥

روپ و نت کو پریم بھولا یو	جا کا ہو تب مکھ مکھ پایو
تی کہوں نہیں سنگیا لائے	پسالاو پریم چھکے مد پائے
جیوں سچان اورن ا بھلا کو	جو چاہت پی درگ سیں راکو
دو کھ سیکم تب اور میں دھارو	رہے سے سب او پچار بسارو
کرت پران نو چھاور پیارو	وہ نادک پر تن من مارو
اکلے ایاز چیت محمود ہی	جن دھونڑو پایو چت کو دھی
برہم روپ پھر گھٹ میں دکھیں	خو تب مکھ کی چھب میں پکیوں
آپ ہی لکھ گیسانی گرہ آگے	کال رات سینے درگ لاگے
بھیت سے نہ بچن اچارے	کر کپاٹ وا کے پئے مارے
ہرچہ بینی بدایں کہ منظر ا دست	کہ بچشمان دل مبیں جز دوست
جو کچھ آوت درشت میں بسور روپ ہر تونی	ہئے کی آنکھوں لکھویت بنا نہیں کوئی

دوہا- ہر ی کو آریخت سوں لکھو مہت بیکانہ کو ی ॥

جو کھو آریخت دھری میں دھری رپ ہری ہو ی ॥

خانہ شادی از رخت آباد	ایدل دوستان بروے تو شاد
نقش شیریں ز دل کند فراد	گر بہ بید لبان شیرنت
در جہاں ہیچ بندہ آزاد	ہرگز از بند گیت سر نکشد
از ازل تا ابد ندید و نہ زاد	مادہ ہر چوں تو نہ زندہ
تو اغم زدن دم ایراد	گر قبولم کنی و گر مردود

۱۲ لے محمود غزنین کا بادشاہ تھا جس نے ہندوستان پر حملے کئے اور ایاز اس کا غلام اور معشوق تھا ۱۲

می فزاید ز حد بیروں بیداد	شخص عشق تو بملک دلم
سرور نیست آنکہ سر نہاد	پیش محراب طاق ابرویت
تا زنا دیدنت کنم شر یاد	دی بدیوان عشق در رفیت
از سر لطف این ندانم داد	ہمدراں دم سوسش مرده گزار

तुव मुख देखें मीत सुरबारी । तुव मुख जग को मंगलकारी ॥
 तुम्हरे अधरा मृत लखि पावै । शीरीं को फरहाद भुलावै ॥
 जा को तुम्हरी भक्ति न होई । जग स्वतन्त्र सेवक नहिं कोई ॥
 तुम सो सुत जग मात न जायो । आदि अंत लों दृष्टि न आयो ॥
 चाहे अपनावे या त्यागे । बोल सकों नहिं अधिक सुआगे ॥
 मम मन देस प्रेम कुतबाला । करत अतोल अनीत बिहाला ॥
 तुम्हरी भूवां की लखि नाथा । को राजा नहिं नाथो माथा ॥
 काल गयो जु प्रेम दरवारा । बिन देखे की करों पुकारा ॥
 तबहीं जबराईल बधाई । कृपा दृष्टि यह देर सुनाई ॥

تب کج جگ کو منگل کاری	تب کج دیکھے بیت سکھاری
شیریں کو فساد بھولا	مہرب آدھر اُمرت لکھ پاوے
جگ سو تنتر سیوک نہیں کوئی	جا کو مہری بھگت نہ ہوئی
آؤ انت لوں درشت نہ آوے	تم سوست جگ مات نہ جایو

+ फरहाद शीरीं पर आशिक छा उसने पत्थर में बसूले से तहर मुलाकात की
 शर्त पर निकाली थी - मासूक के मरने पर बसूला मार कर मर गया ॥

+ जबराईल खुदा का फरिश्ता है जो पैगम्बरों के पास खुदा का पैगा भलाता है

دلبران گرچہ دلبرند ولیک
 زہر نوشندگان جامِ غمت
 دلِ عشاق ساختہ است ہدف
 دیگران نیکند ساغرِ وصل
 مستحقِ بلا و اندوہیم
 از عرائی صد آفرین شود
 مخبرانِ دیارِ عالمِ عشق
 از ہمہ دلبری علی الاطلاق
 می نخواہند از کسے تریاق
 تیر چشم بتان سیمیں ساق
 ما عسریاں مدام در و فراق
 عاشقان را بلاست استحقاق
 سختم گر کسے برو بسرائ
 این خبر میدہند در آفاق

॥ तुब मुख प्रेमिन नैन प्रकासी । तुब दरतीरथ चाहकरासी ॥
 ॥ तुमसो सुन्दर और न होई । रूप अनन्य कहे सब कोई ॥
 ॥ रूप मनोहर बहु जग माहीं । शोभा में तुब समता नाहीं ॥
 ॥ तुब वियोग विष व्यालो चारवें । ते तहीं आस औषधी रारवें ॥
 ॥ मन प्रेमिन को लक्ष अनूपा । दृग सर प्रिय पिंडरी ज्यो रूपा ॥
 ॥ और सवे मिल दरशन पावें । हम वियोग के दुरव उठावें ॥
 ॥ हमरे भाग सु संकट दीवो । प्रेमिन दुरव नेग करि लीनो ॥
 ॥ साधु इराक प्रसंसा गावें । कोइ सम बचवा देश सुनावें ॥
 ॥ प्रेम देश के भेदी प्यारे । चहुँ ओर यह बचन उचारे ॥

تب کعبہ پرین نین پرکاسی
 تم سو سندر اور نہ ہوئی
 روپ منوہر ہو جاگ ماہیں
 تب بیوگ بکھ پیا لو چاکھیں
 من پرین کو لچتہ انویا
 تب در تیر حق چاہک راسی
 روپ انپہ کسے سب کوئی
 سو بجا میں تب سمت ناہیں
 تے نہیں آس اوکھدی راکھیں
 درگ سرپی پنڈری جیوں روپا

اور سبے مل درشن پاویں
ہم بیوگ کے دکھ اٹھاویں
ہم سے بھاگ سو سنکٹ دیو
پر مین دو کہہ نیگہ کر لینو
سادھو عراق پر سنا گاویں
کوئی مہم بچے باویں سناوے
پریم دیس کے بھیدی پیارے
پتھوں اور یہ بچن اوچارے

کہ بچشمان دل میں جز دوست
ہر چہ بینی پداں کہ مظهر اوست
جیسے کی آنکھوں میں لکھو سیت بنا نہیں کوئی
جو کچھ آوت درشت میں بسور پ ہر ہوئی

دوہا - हिय की आरिबन सोलखो भीत बिना नहिं कोय ॥

जो कहू आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

تازہ شد بوستان موسم گل
داروے درد سینہ بلبل
سید ہر نا ہنسائے چیں برباد
نگہت چین طرہ اسنبل
برگہائے گل از پئے خواباں
بستہ بر چشمہائے بستاں پل
باغبان بر سمند باغ انداخت
دیگر از حلالہ ریاحیں جل
نظرے کن بہ زنگیں مخمور
کہ بیکبار مست شد بی مل
از دم قول ببلان سحر
بر شد از شیشہ نعرہ قلقل
باز و دراج را بہ صحن چمن
از گل لالہ سرخ شد چنگل
من مخمور در چنین روزے
سر فرو برودہ بودم از سر ذل
از پئے آنکہ چوں شوم وصل
ناگہاں این شنیدم از وصل

रितु बसंत हबिले फुलवारी । बुलबुल उरवत औबधि भारी
वृक्ष मदचीव बिदर करहारी । कुटिल सुगंधित अलक तुमारी ॥
पद्म फूल लेतु बहित प्यारे । बांधे सेत बाग के तारे ॥
मालिन बाग अस्व पै डारे । पुष्प रंग बहु भूल सुधारे ॥

देख भरे मद नरगिस कैसे । बिन आसव मद माते जैसे ॥
 प्रात समय सुन बुलबुल धानी मद भाजन मुख शब्द सुआनी
 तीतर बाज बाग रंग भीने । पंजा लाल फूल संग कीते ॥
 में मद मातो तादिन भाई । पिय वियोग बैठो सिरनाई ॥
 क्यों कर मिले मीत मन भायो । तहीं परेवा बचन सुनायो

بیل اور کھت او گند بھاری
 کنبل سو گندیت اک تھاری
 باندے سیت باگ کے تارے
 پوش رنگ ہو جھول سدھارے
 بن آسب مد مانتے جیسے
 مد بھاجن کو شبہ سحرانی
 پنجمہ لال پھول سنگ کینے
 پیہ پیوگ بیٹھو سیر نائی
 تہیں پر یوا بچن سنایو

رت بخت چب لے پھواری
 مرگ مد چین نذر کر ڈاری
 پتر پھول لے تب ہت پیارے
 مارن باگ آسویے ڈارے
 دیکھ بھرے مد رنگس کیسے
 پرات سخی سن بلبل بانی
 تیر باز باگ رنگ بھینے
 میں مد ناتو تادون بھائی
 کیونکر لے سیت من بھاپو

ہر چہ بینی بیداں کہ منظر اوست
 جو کچھ آوت در شطیں بسور و پھر ہوئی

کہ بچستان دل میں جز دوست
 جیسے کی آنکھوں میں لکھویت بنانا نہیں کوئی

دوہا — ہر کی آری بن سولارہو مीत बिना नहिं कोष ॥
 जो कबू आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ملک آفت رانگاں دارو
 نظری کن کہ صد نشانی دارو
 کہ بشتاق سسر گراں دارو

ہر کہ عشق ترا بجاں دارو
 دلم از تیسر غمزہ چشمت
 صوفی ما عجب سبکداز است

یار ما لطف بیکراں دارد
آنکہ او چونتو دستان دارد
بر سر دوست کے زیاں دارد
سالہا سر بر آستان دارد
درمیاں تیغ خو نقشاں دارد
ایں دو مصرع بر زباں دارد

گر چہ ما جرم بے عدو داریم
ہیچکے دل بد لب سے نہ ہد
سر خود را اگر فدا سازی
طالب بار بزم ہمدیاں
ترک من از برائے کشتن من
ہر کہ او جزئی کے منیداند

جو تو مہم پران سم جانے । راج جگت کو بڑھا سومانے ॥
ہیہ مہرو تو بھگ سر پر سے । دے کہ آتے کھیاں اور دے سے ॥
آتی ہی بھڑ ہمارو جانی ۔ چاہت ہارن پہ بھڑانی ॥
جو پہ مو مہن پا پ دھنرے ۔ مہت ہمارے کبھن نہ ہرے ॥
کوئی اور سوں مہن نہ لگا دے ۔ تو مہو مہن بھارن جو پا دے ॥
آپنو سیر نہ بھار کی جے ۔ مہت دھڑ مہن کبھن نہ پتی جے ॥
بہر سہن مہت سہا آہل لایہ ۔ چنڈ بہن دھڑی سیر رارے ॥
مو پھارو مہم مہارن واری ۔ رارن مہان نیک دھڑاری ॥
جو کوئی رکھ رکھ دی جانے ۔ دھو دھڑ کھنڈ بہرانی ॥

راج چلت کو برکھا بھو مہو
دیکھ انیک گھاؤ اور دے سے
چاہن ہارن لے بھڑ و تانی
مہت ہمارے کبھوں نہ ہیرے
تم سو مہن بھارن جو پا دے
مہت دھڑ میں کچھ نہ پتی جے

جے تم پریم پراں سم جانے
ہیہ مہرو تہن دگ سر پر سے
آتی چھو در ہما بد و گیانی
جو پی مہو میں پا پ گھنیرے
کوئی اور سوں مہن نہ لگا دے
آپنو سر نہ چھا اور کیجے

چندر بدن دھری سر رکھے
راکھت میان زکٹ تلواری
وہی دوہرہ کٹھنہ بھانے

ہرچہ بینی ہاں کہ منظر اوست
جو کچھ آوت درشت میں سب روپ ہر ہوتی

برسن میت سبھا اہل کھ
مویا رو م مارن باری
جو کوئی ایک روپ ہو جانے

کہ بچشمان دل میں جز دوست
ہے کی آنکھن سوں لکھوت بنا نہیں کوئی

دوہا-ہیہ کی آرخن سوں لکھو میت بیانا نہن کوہ ॥

جو کھو آرات دھڑ میں ویسھ روپ ہری ہوہ ॥

وصل او را محال میگویند
ابروش را ہلال میگویند
برخش آنکہ خال میگویند
جام جسم را سفال میگویند
غسلت میم و دال میگویند
پائے صفت نعال میگویند
پانگاہ کمال میگویند
روز و شب قیل و قال میگویند
از سر و جد و حال میگویند

قرب اورا وصال میگویند
چہرہ اش را چو ماہ می بیند
داغ سوز شرار سینہ ماست
جرعہ نوشان بادہ لعلش
خط نویساں وہان و زلفش را
سند شاہ را گدا یا نش
ناقضاں دستگاہ دنیا را
قصہ نا قبول و قول قبیح
صوفیاں در رہ صفا ہر دم

نیکٹ واسن اہی میلہو سوردی ۔ میلہو وا کو کٹین سوہوہی
وا موب پورن چند برہانے ۔ دھتیا کو شاشی موہن سو جانے ॥
بیرہ داگ مہم ہیہ پر گاہی ۔ پیارے کے موب سو تیل مہی ॥
اہی اڈھرن مد پیون ہارے ۔ جم جامہ ہیکری نیرہارے
آننن اٹلک سولہرک گاہے ۔ مہم دال سیوڈا بتاویں ॥

सिंहासन महाराजन केरे । साधू जन पग पोछन हैरे ॥
 खोटे जन धन को बड़ माने । पूरन गुन जग धन को जाने ॥
 खोटी बातें जगत कहाती । तिन ही में निस दिन रति बानी ॥
 साधु सदा सत मारग धावें । प्रेम मगन है बचन सुनावें ॥

نکت باس اوہی مل سوئی . ملبو واکو کہن سو ہوئی
 وانکھ پورن چند بکھانے . دو تیا کو شیش بہونہ سو جانے
 برہہ داگ مم ہیسہ پرگیو . پیارے کے نکھ سو تل بھيو
 اوہی ادہرن مد پیون ہارے . جہم جا مہی ٹھکری نزدھارے
 آئن آک سو لیکھک گاویں . میسم دال سو برہقا بتاویں
 سنگھاسن ہمارا جن کے رے . سادھو جن پگ پوچھیں ہیرے
 کھوٹے جن دھن کو سبڑ مانے . پورن گن جگ دھن کو جانے
 کھوٹی باتیں جگت کہلانی . تن ہی میں نس دن رت بانی
 سادھو سداست مارگ ہاویں . پریم گن ہو بچن سناویں

کہ بچشان دل میں جز دوست . ہرچہ بینی بداں کہ منظر دوست
 ہے کی آنکھوں لکھویت بنا نہیں کوئی . جو کچھ آوت درشت میں بستو روپ نہر ہوئی

دوہا - ہیکو آخیتن سوں لربو مہت بیتا نہن کو ی ॥

جو کھو آوات دھری میں ویسورہ ہری ہو ی ॥

ہر کرا مایہ یقین باشد . دیدہ او حنہ ای میں باشد
 خاتم ہمت بلند ش را . ہمد آسمان نگیں باشد
 غیر حق کس نباشد ش منظور . نظر عارفان چنیں باشد
 میرسد عاقبت بہ عیش مدام . ہر کہ ادوا لکاحزیں باشد

۱۵ بادشاہ جمشید نے ایک پیالہ بنایا تھا جس سے آئندہ کے حالات معلوم ہوتے تھے ۔

بندہ کو زخا حبگی برہ
وانکہ شد محرم سرائے صفات
ایکہ نائی دے بدین خدا
رہروے کو چشید ساغر وصل
داستانِ مراو واکر عشق

عالمش بندہ کبیں باشد
حرم ذات راستہ میں باشد
کار دیں را خلل بدیں باشد
با خود او را مدام کیں باشد
ہر مرادیکہ ہست ایں باشد

جاں غٹ پونجی نہ چہ ہوئی ۔ ہر درشان نیت پاوی سوئی ॥
بہی بیو سائے آنگوٹی جاکی ۔ لگے ہانول پونگ مانتا کی ॥
بیت ہر رپن کاऊ دے۔ جانی سے سی دھڑی ہی پے رے ॥
پر لاکہ ہی میں نیت سوخ پاویں ۔ سدا دھرو مہ پر مکو دھیاویں ॥
سائو سو جو بڑپن تیا گے ۔ جگ میں ہا پ سو ویر لے لے ॥
پر م بہن کے بہد ہی پے رے ۔ سوئی پر م کے نیکٹ سوہاویں ॥
سکھو کھن ہر دھرم نہ آئے ۔ کرم دھرم میں بگن لگے ॥
باٹ چلت پیر کھن کھن جاویں ۔ آہنکار سو دھرو ہاویں ॥
پر م کتا کو سار سوہاویں ۔ یہی سہی ہے کھن سناویں ॥

ہر درشن نیت پاویں سوئے
لگی بھان نکہ نک میں تاکے
گیانی ایسی درشت ہی پیکھیں
سدا دوکھ میں پر بھو کو دھاویں
جگ میں ہاتھ سو برے لگے
سوئی پر بھو کے نکٹ سوہاویں
کرم دھرم میں بگن لگے

جا گھٹ پونجی نہ چہ ہوئی
بڈھ بھاسے انگوٹھی جاکی
بن ہر روپ نہ کا ہو دیکھیں
پر لوک ہی میں نیت سکھ پاویں
سدا دھو سو جو بڑپن تیا گے
پریم بھون کے بھید ہی پاویں
ایک ہو چھن ہر دھرم نہ آئے

اہنکار سو دور بہاؤے	باٹ چلتی پنی چھب چھک جاے
یہ ہی صحیح ہے کوک سنایو	پندیم کتھل کو سار سو ہایو
ہرچہ بینی بدیاں کہ منظر دوست	کہ بچشمان دل میں جزدوست
جو کچھ آوت درشت میں بسور وپ ہر ہوتی	ہے کی آنکھن سوں لکھویت بنا نہیں کوئی

دوہا - ہین کی آراوین سوں لربو مہیت بینا تہیں کوہ ॥

جو کچھ آراوین تہیں میں ویشو روپ ہری ہوہ ॥

دیم آنجا کے دلار اے	دوش رفتہ بسوئے حمائے
ناز کے مہ رخے گل اندامے	چاہے دلبرے و بیبا کے
سرکشے خونخوڑے و خود کامے	سردستے و یاسمین لالے
مست چٹھے و ساغر آشامے	تند خوئے و مردم آزارے
گاہ در غم عشہ علائے	گاہ در بحث حیلہ پردانے
از رخ و زلف کفر و اسلائے	عاشقاں راہمی نمود عیاں
تا نواز و زروسے انعامے	چوں مرادید سوے خود طلبید
در من از ہوش و آگہی نامے	متحیر چناں شدم کہ نامد
بوصالی کہ داد پینامے	می ندانم کہ اندراں چہرت

کال رات ہیمام سیधारو । دےو تہاں سک میں پڑارو ॥

چپل منوہر نیڈر سو زججلاں ۔ چند بدن پंकج تن کو مل

سوں سوتن शुभ महक चमेली । गरबी विठुर मतलबी मेली ॥

अति कुसीलनर पीड़ाकारी । मत्त नैन मद पिये सुभारी ॥

कहुं चरचा में बनवत बातें । रस सिंगार अधिक कोटति ॥

प्रेमिन प्रगत कियो है सभरम । आनन अलक धर्म अरु अधम ॥

मोहि देखि तिज निकट बुलायो । चाहत दियो प्रसाद सुहायो ॥

बिस्मय भयो मूर्छित होही । संजा देह रही नहिं मोही ॥

नहिं जानों अचरज ततकाला । किन दीनो संदेश विशाला ॥

دیکھو تھاں ایک میں پیارو

چند بدن پشیم چن کوئل

گر بی نہ پھور مطہری سیلی

مست نین مد پیے سو بھاری

رس سنگھار ادھک کوتاہیں

آئین الگ دھرم اور ادھرم

چاہت دیو پر ساد سو ہادیو

سم گیارہوی رہی نہیں ہوئی

کین دینو سندس بسا لا

کال رات حسام سدھارو

چپکل منو ہر بندر سو اوخل

سروں سو تن شہہ مہک چیلی

ات کو سیل نہ پیرا کاری

کہوں چرچا میں بن بت باتیں

پر میں پرکٹ کیوسے بھرم

ہیں نہ کچھ نچ نکٹ بلادیو

بستے بھینور مور چھٹ ہو ہی

نہیں جانو اچرج ات کالا

ہرچ بینی بداں کہ مظر اوست

جو کچھ آوت درشت میں بستور وپ ہر ہوئی

کہ بچشان دل میں جز دوست

ہے کی آنکھوں میں لکھ میت بنا نہیں کوئی

दोहा-हिय की आरिबन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥

जो कह आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

॥ हृष्ये ॥

कीनो पूरन ग्रंथ कृपा जगदीश्वर स्वामी ॥

धरतो आलम तत्व अरिवल जग अंतर जामी ॥

सो गुन निरगुन रूप एक बहु बिधि कहि गायो ॥

भयो मनोरथ सिद्ध अधिक आनंद पुर छायो ॥

बलदेव सुकवि प्रेमी सुबुद्धि ते याके स्वादहि लहे ॥

ते सकल चराचर जगत को विश्व रूप दर्शन कहै ॥

सोरठा-श्री गुरुदेव दयाल परम कृपा जायै करें ॥

पावै बुद्धि विशाल निपट निकट जगदीशहरी ॥

दोहा-तुम मोमे निसदिन बसो मैं तो परम असाधु ॥

जो कठोर बानी कही सो क्षमियो अपराध ॥

॥ इति श्री ज्ञान प्रकाश सम्पूर्णाभ शुभं ॥

پدماوت بھاگھا مترجم

ملک محمد جاسٹی کی ذات کسی تعارف کی محتاج نہیں ہے اور
 اُن کی کتاب پدماوت بھاگھا ایک نہایت مشہور کتاب ہے۔ ملک محمد
 جاسٹی نے اپنی اس کتاب میں قصہ کے پیرایے میں مسائل تصوف کو
 خوب ہی حل کیا ہے اور آخر کتاب میں قصہ کا خلاصہ بیان کر کے
 اخلاقی نصیحت ایک نہایت مؤثر پیرایے میں کی ہے۔ یہ کتاب اگرچہ
 اس سے پہلے مختلف مطابع میں چھپی مگر جیسا ترجمہ با محاورہ اور
 اصل کی تصحیح اس مرتبہ کی گئی ہے اس سے زیادہ ممکن نہ تھی۔ اس کا
 ترجمہ جناب پنڈت بھگوانی برشاد پانڈے نے جو قابلیت سے کیا ہے
 وہ دیکھنے سے تعلق رکھتا ہے۔ یہ کتاب عرصہ سے نایاب تھی اب
 چھپ کر تیار ہو گئی ہے اور قیمت صرف دو روپیہ (عارف ہے
 جلد طلب فرمائیے ورنہ طبع ثانی کا انتظار کرنا پڑے گا۔

المنشأ
 منیجر نول کشور پریس صیفہ بک پوٹو لکھنؤ

एक नई चीज़

सच्चा तर्जुमा वेदांत ग्रन्थ फ़ारसी मामुकीमां का हिंदी
व्रजभाषा पद्य में सन् १९१६ में हजारों अनुवादों में से छाँट-
कर ~~क~~ बहादुर रियासत रामपुर रहेलखंड की आज्ञा-
नुसार ~~क~~ किया गया—जिसके इनाम में प्रसन्न होकर
एक बहुत बड़ा बाग़ आम का बरूसा नया—



لفظ بہ لفظ ما مقیمان ویدانت کا ترجمہ

جو ہزارہا ترجموں سے منتخب کر کے سمیت ۱۶۱۹ میں
حسب خواہش جناب نواب صاحب بہادر بالقابہ والی
ریاست رامپور روہیلکھنڈ یوپی جو بغرض افاضہ عام کیا گیا—
جسکے ~~میں~~ خوش ہو کر ریاست سے ایک قطعہ با-
وسیع انبہ کا عطا کیا گیا